जो जीवन भर दूसरों के
जीवित रहीं और जिन्हो
अपने देशवासियों की से
के लिए बड़े-से-बड़ा
त्याग और तपस्या की।

कस्तूरबा

डॉक्टर सुशीला नैयर
के विवरण पर आधारित

प्रस्तुतकर्ता
एरिक फ्रांसिस

प्रकाशक
पुरोहित एण्ड सन्स्

राष्ट्रीय गांधी शताब्दी समिति की महिला
बाल उपसमिति द्वारा मान्य

सर्वाधिकार सुरक्षित

Rs 1-60

दो शब्द

सन् १९६९ का यह वर्ष गांधी जन्म-शताब्दी वर्ष है, जो भारत में ही नहीं, दुनिया भर में मनाया जा रहा है। बहुत से लोगों को पता नहीं कि महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी का जन्म एक ही साल में हुआ था। इसीलिए जन्म शताब्दी दोनों ही के लिए मनाई जा रही है। मेरा विचार है कि किसी गौरवशाली पति-पत्नी की जन्म-शताब्दी का एक साथ मनाया जाना दुनिया के इतिहास की पहली घटना है। भारत की इस महान पुत्री की याद में यह बहुत ही उपयुक्त श्रद्धांजलि है। कस्तूरबा ने जीवन भर कठिन-से कठिन परिस्थितियों में भी अपने पति का पूरा साथ दिया था। गांधीजी के "महात्मा' बनने में कस्तूरबा का बड़ा ही महत्वपूर्ण हाथ था। गांधीजी सत्याग्रह में कस्तूरबा को अपना गुरु कहते थे। गांधीजी उनसे कोई ऐसा काम नहीं करा सके, जिसे वे स्वयं समझती नहीं थीं। सत्य के सभी प्रयोगों में वह उनके साथ रहीं। लेकिन व्यवहार में लाने से पहले वह हर चीज को पूरी तरह से परख लेती थी।

इस प्रकार गांधीजी को अनुभव हुआ कि जहां प्रेम है. एक दूसरे के लिए आदर है और विरोधी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है, वहां आपस के मतभेद हमेशा सद्भावना से सुलझाये जा सकते हैं। कहा जाता है कि खोजकी दुनिया में जो तैयार होते हैं, अवसर उनकी मदद करता है।

एक अनुभव से जो बहुत से पतियों को होता है नौजवान मोहन के हाथ सत्याग्रह का महान और अचूक हथियार पड़ा। इस हथियार में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने की ताकत थी, जैसा कि कस्तूरबा और महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद, अपने देश में छूआछूत के सामाजिक अन्याय तथा शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा दुर्बल राष्ट्रों के राजनैतिक एवं आर्थिक शोषण के विरुद्ध आजादी के लिए भारत के संघर्ष के रूप में अहिंसात्मक लड़ाई लड़कर दिखा दिया।

कस्तूरबा के जीवन की कहानी महात्मा गांधी के जीवन और कार्य की कहानी है। मि. एरिक फ्रांसिस ने इस कहानी को आत्मीय भाव से चित्रों में प्रस्तुत करके बड़ी जनसेवा की है। मुझे पूरी आशा है कि यह पुस्तिका हर स्कूल के बच्चों के हाथों में पहुंचेगी, जिससे नई पीढ़ी को बा और बापू का परिचय मिले और गांधीजी के जीवन, उनके उन संदेश तथा शिक्षाओं की जानकारी प्राप्त हो, जिनसे हमें आज़ादी मिली। हिन्दुस्तान को नहीं. सारी दुनिया को, आज इस संदेश की पहले से भी कहीं ज्यादा जरूरत है। अणुयुग के इस युग में अहिंसा ही एकमात्र वह शक्ति है, जो अन्याय के विरुद्ध लड़ने और अपनी आजादी को सुरक्षित रखने के लिए प्रभावशाली मार्ग दिखा सकती है। मेरी कामना है कि गांधी शताब्दी आज के युवकों को ऐसी प्रेरणा दे, जो हमारे बड़ों को और हमें गांधीजी तथा कस्तूरबा ने दी थी। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तिका इस प्रक्रिया में सहायक होगी।

प्रकाशक की ओर से

'गांधी जन्म-शताब्दी चित्र-कथावली' की यह दूसरी कड़ी है। भारतीय नारी में जो सर्वोत्तम है, कस्तूरबा उसकी मूर्त रूप थीं। उनका जीवन त्याग, सेवा, प्रेम और भक्ति का जीवन था। शाब्दिक अर्थ में यद्यपि कस्तूरबा अनपढ़ थीं, फिर भी उनमें सहज-बुद्धि तथा बौद्धिक कुशलता थी। बापू की भांति भांति की कठोर राजनैतिक तथा सामाजिक प्रवृत्तियों में यदि बा ने खुशी-खुशी और अथक सहयोग की भावना से हाथ न बंटाया होता तो उनका काम उतना आसान न हो पाता। बा बापू की सच्चे अर्थों में अर्द्धांगिनी थीं। उन्होंने अपने यशस्वी पति में अपने आपको लीन कर दिया था। कस्तूरबा के देहावसान पर गांधीजी ने कहा था, "बा के बिना मैं जीने की कल्पना नहीं कर सकता। उनकी मृत्यु से जो सूनापन आया है वह कभी दूर नहीं हो सकेगा"। किसी पत्नी के लिए इससे बढ़कर और आत्मीयता से भरी और कोई श्रद्धांजलि नहीं हो सकती।

देश आज गांधी-जन्म-शताब्दी के साथ-साथ बा की जन्म शताब्दी भी मना रहा है और वह ठीक भी है। जिस महिला ने अपने देश की आजादी तथा मानव-मात्र को ऊंचा उठाने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था, उसके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित किया जाना बड़ा ही उपयुक्त है। कस्तूरबा किस उच्च भारतीय नारीत्व की प्रतिमा थीं, वह हमारी नवीन पीढ़ियों को मालूम हो, यही उद्देश्य इस चरित्र चित्रावली के पीछे है।

यह उपयुक्त ही है कि इस गांधी शताब्दी के द्वारा, जो कि बा की भी शताब्दी है, राष्ट्र उस महिला के प्रति आभार प्रदर्शित कर रहा है, जिसने आजादी की लड़ाई तथा अपने देशवासियों की मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। हम कस्तूरबा को भारतीय नारीत्व के एक ज्वलंत दृष्टांत के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे नई पीढ़ी उनका अनुकरण कर सके।

बम्बई १३ जनवरी १९६९

पुरोहित एण्ड सन्स

....उस फूल की भांति, जो तूफान का सामना करता है, कस्तूरबा परीक्षाओं तथा यातनाओं के बीच अपनी दिव्यता और पवित्रता से सूर्य का प्रकाश बनीं।

कस्तूरबा

कस्तूरबा का जन्म १८६९ में पोरबन्दर में हुआ

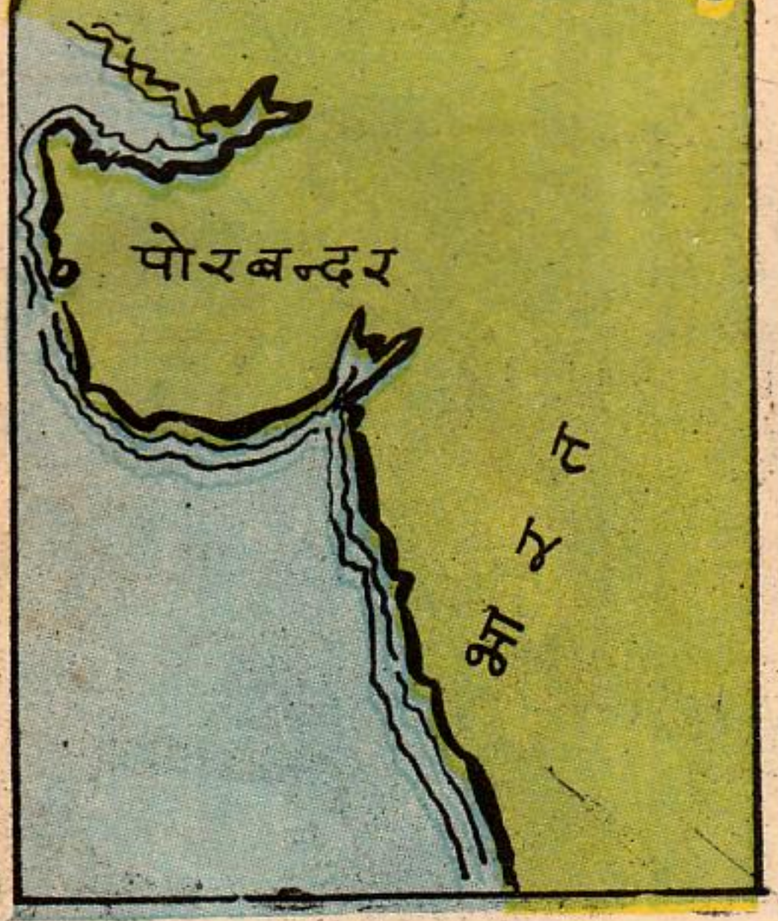

उनके पिता गोकुलदास मकनजी एक व्यापारी थे और गांधीजी के पिता करमचन्द पोरबन्दर के दीवान थे। दोनों परम मित्र थे।

मोहनदास गांधी और कस्तूरबा की सगाई जिस समय हुई, उस समय वे केवल सात साल के थे।

कस्तूरबा कभी पाठशाला नहीं गई, क्यों कि उनका हिन्दू परिवार पुराने विचारों का था।

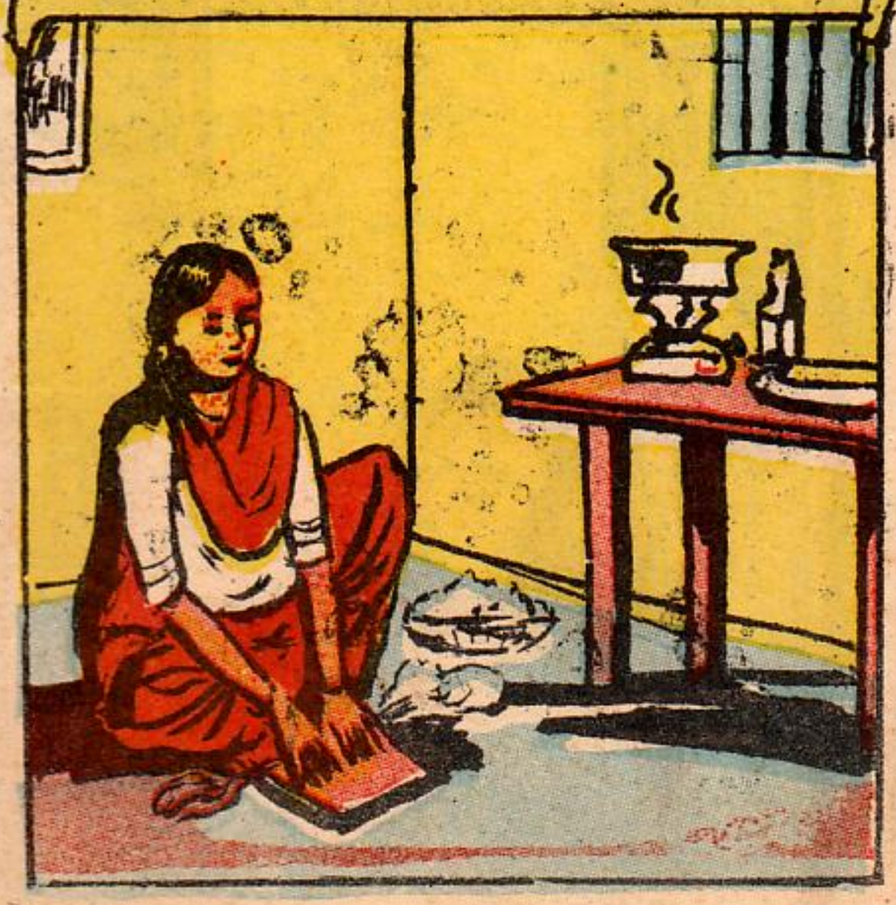

१८८२ में उनकी शादी मोहनदास के साथ धूमधाम से हुई। दोनों उस समय १३ वर्ष के थे।

शादी के बाद बचपन से ही मोहनदास ने कई बार अपनी बालिका पत्नी को पढ़ाने का प्रयत्न किया।

अक्सर बालक पति अपनी पत्नी के साथ कठोर व्यवहार करता।

मैं मंदिर जा रही हूं।-----

नहीं, तुम नहीं जा सकतीं।

मैं जाऊंगी, जरूर जाऊंगी। आप कौन होते हैं, मुझे रोकनेवाले?

यह लो, मैं वापस आ गई।

भागो यहां से, मैं तुमसे बात नहीं करता।

इन सबके बावजूद मोहन कस्तूरबा को बेहद प्यार करता।

अठारह वर्ष की उम्र में मोहन को घरवालों ने पढ़ाई के लिए इंगलेण्ड भेजना तय किया।

विदाई असह्य थी।

रोओ मत, मैं जल्दी ही लौट आऊंगा।

१८९१ में बैरिस्टर बनने के बाद गांधीजी स्वदेश लौटे और राजकोट चले गये।

उन्होंने अपनी पत्नी को पढ़ाने के कई बार फिर प्रयत्न किये, लेकिन व्यर्थ।

कस्तूरबा के प्रति प्रगाढ़ प्रेम होने पर भी वह एक असहिष्णु पति बने रहे।

तुम मेरे घर से निकल कर अपने मायके जा सकती हो। मैं नहीं चाहता कि तुम वापस आओ।

अंत में वह अपनी पत्नी को फिर से घर में रखने के लिए राजी तो हो गये, लेकिन तब जब कि कस्तूरबा एकदम दुखी हो गई थी।

राजकोट से गांधीजी बम्बई आये और अपना मामूली-सा घर बसाया।

बम्बई में वकील के रूप में गांधीजी असफल रहे। उनकी आमदनी बहुत कम थी। उन्होंने अध्यापक के पद के लिए प्रयत्न किया। लेकिन सफलता नहीं मिली। अंत में वह राजकोट लौट गये।

१८९३ में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में एक मुकदमा मंजूर किया और अकेले समुद्री जहाज से रवाना हुए।

अफ्रीका की अपनी दूसरी यात्रा में उन्होंने कस्तूरबा और अपने दोनों बच्चों को भी साथ ले लिया।

अब तक वह पूरी तरह दक्षिण अफ्रीका में अपने देशवासियों को जातिभेद से छुटकारा दिलाने के संघर्ष में पूरी तरह जुट गये। यह बात अंग्रेजों को अच्छी नहीं लगी।

ज्योंही उन्होंने डरबन में कदम रखा कि -

गांधी, वापस जाओ।

यह तो बहुतसी भयंकर परिक्षाओं में से पहली परीक्षा थी, जिसका बेचारी कस्तूरबा को सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने उनका डटकर मुकाबला किया।

लगभग इसी दौरान गांधीजी ने अपने परिवार को आधुनिक बनाना चाहा।

पारसी लोग फैशन में सबसे आगे माने जाते हैं, तुम्हें भी वैसी ही पोशाक पहननी चाहिये ----लम्बे मोज़े वगैरा----

लेकिन लम्बे मोज़ों से तो पसीने की बदबू आती है।

और तुम सबको छुरी-कांटे का प्रयोग करना चाहिये।

लेकिन विदेशी सभ्यता के ये चिन्ह केवल थोड़े दिन ही रहे। गांधी-परिवार ने फिर भारतीय ढंग को अपना लिया।

डरबन में वकालत के दिनों में गांधीजी के आफिस के कर्मचारियों के अपने हाथ से अपना सारा काम करने की प्रथा थी, यहां तक कि टट्टी-पेशाब का बर्तन भी अपने आप साफ करना होता था।

कर्मचारियों में एक ईसाई था और नया था। गांधीजी ने कस्तूरबा को उसके पेशाब के बर्तन को साफ करने का आदेश दिया।

मैं उसके पेशाब के बर्तन को साफ नहीं करूंगी। उसे अपने आप करने दीजिये।

मैं यह बदतमीजी अपने घर में सहन नहीं कर सकता।

गांधीजी आपे से बाहर हो गये।

मैं कहता हूं, निकल जाओ।

क्या आप सारी हया-शरम खो बैठे हैं? मैं कहां जाऊंगी। भगवान के लिए होश में आओ और दरवाजा बंद कर दो।

गांधीजी बहुत लज्जित हुऐ और उन्होंने कस्तूरबा का कहना मान लिया। कस्तूरबा ने अपनी अद्वितीय सहनशक्ति से उन्हें जीत लिया।

गांधीजी की बीमारी के दिनों में कस्तूरबा ने उनकी खूब सेवा की और उन्हें स्वस्थ बना लिया।

थोड़ा-सा बैठ जाइये, आपको अच्छा लगेगा।

१९०१ में गांधीजी ने स्वदेश लौटने का इरादा किया। अफ्रीका में बसे हुए भारतीयों ने गांधीजी को उनकी मूल्यवान सेवाओं के लिए बहुत से मानपत्र और कीमती उपहार भेंट में दिये।

कस्तूरबाई, मैं ये गहने लौटा दूंगा।

तुम्हें जरूरत नहीं होगी। बच्चे तुम्हारे इशारे पर नाचेंगे, लेकिन अपनी पुत्र-वधुओं के बारे में तो सोचिये।

लेकिन बच्चों की शादी तो अभी होनी है। अगर तुम्हें गहनों की जरूरत हो तो मुझसे कह देना।

आप से कह दूं? आप तो आज बच्चों को साधु बनाने की कोशिश कर रहे हैं। नहीं, ये गहने लौटाए नहीं जायेंगे--- और वह हार तो मुझे भेंट किया गया था।

मैंने आपकी दिनरात सेवा की है। आपने जो चाहा, मुझसे करवाया है। मैंने दासी बनकर सबकुछ सहा है।

मगर काफी मनाने पर आखिर कस्तूरबा मान गई। गहने एक ट्रस्ट को सौंपे गए, समाज-हित के लिए।

१९०२ में गांधीजी को फिर दक्षिण अफ्रीका बुलाया गया।

कई बार कस्तूरबा के विश्वास और साहस को कठिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ा। एक बार उनकी गंभीर बीमारी में डाक्टर ने उन्हें गाय के मांस का शोरबा पीने का सुझाव दिया।

नहीं, मैं गाय के मांस का शोरबा नहीं पीऊंगी। यह मेरे सिद्धांत के विरुद्ध है।

पर यह भी आवश्यक है।---

नहीं, कृपया मुझे यहां से तत्काल ले जाईए।

अतः उन्हें डरबन से फिनिक्स ले जाया गया, जहां एक स्वामीजी उनसे मिलने पधारे।

.... लेकिन कस्तूरबा, गाय के मांस का शोरबे का सेवन शास्त्रों में वर्जित नहीं हैं।

स्वामीजी, मैं ऐसे साधनों से ठीक नहीं होना चाहती।

एक दूसरे अवसर पर जब वह बीमार थी। .....

तुम्हें नमक और दाल छोड़ देनी चाहिए।

आप भी क्यों नहीं छोड़ देते।

मैं एक साल के लिए छोड़ देता हूं।

कस्तूरबा को आत्म-ग्लानि हुई। उन्होंने गांधीजी से अपना प्रण तुड़वाने का भरसक प्रयत्न किया, लेकिन व्यर्थ।

१९०६ में गांधीजी ने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। बहुत सोचने के बाद उन्होंने कस्तूरबा से इसके बारे में चर्चा की।

आज से कस्तूरबाई, तुम एक स्वतंत्र स्त्री हो। ------

फिनिक्स आश्रम और टाल्स्टाय फार्म की स्थापना में कस्तूरबा ने अपने पति को पूरा सहयोग दिया। .....

मार्च १९१३ में दक्षिण अफ्रीका के न्यायालय ने फैसला दिया।

भारतीय विवाह अवैध घोषित हो गये

उस फैसले के अनुसार मैं आपकी पत्नी नहीं हूं।

तुम्हारे बच्चे भी अब तुम्हारे वारिस नहीं हैं। हम इस अन्यायपूर्ण फैसले का विरोध करेंगे।

दक्षिण अफ्रीका में होने वाले जातिभेद कानून के विरूद्ध संघर्ष में कस्तूरबा ने गहरी दिलचस्पी ली।

वे हमारे साथ ऐसा बर्ताव नहीं कर सकते। हम हर तरह से उनके विरूद्ध लड़ेंगे।

तब हमें मिलकर यह लड़ाई लड़ना चाहिए। अगर आप और मेरे बच्चे यातनाएं सह सकते हैं तो मैं भी पीछे नहीं रहूंगी। मुझे इस आंदोलन में भाग लेना ही होगा।

कस्तूरबा ने सीधा सत्याग्रहियों की पहली पंक्ति में अपना स्थान ग्रहण किया।

उन्होने फिनिक्स आश्रम की पांच स्त्रियों के साथ उस ऐतिहासिक लड़ाई में सत्याग्रह किया, जिसके फलस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्हें मेरित्सबर्ग की जेल में रखा गया।

जब वह जेल से रिहा हुई तो उनका स्वास्थ्य एकदम बिगड़ गया था।

जनरल स्मटस से बातचीत करके लौटने के बाद गांधीजी ने बड़ी सावधानी से उनकी देखभाल की।

थोड़ा सा नारंगी का रस पी लो।

जबकि वह जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रही थी, गांधीजी रामायण पढ़ते या भजन सुनाते।

जब दक्षिण अफ्रीका से प्रस्थान करने का समय आया तो कस्तूरबा ने गांधीजी के साथ सारे देश का भ्रमण किया और अभिनंदनों में गांधीजी के साथ रहीं।

जनवरी १९१५ में गांधीजी कस्तूरबा और बच्चों को लेकर भारत लौटे। रास्ते में वह इंगलैण्ड में रूके।

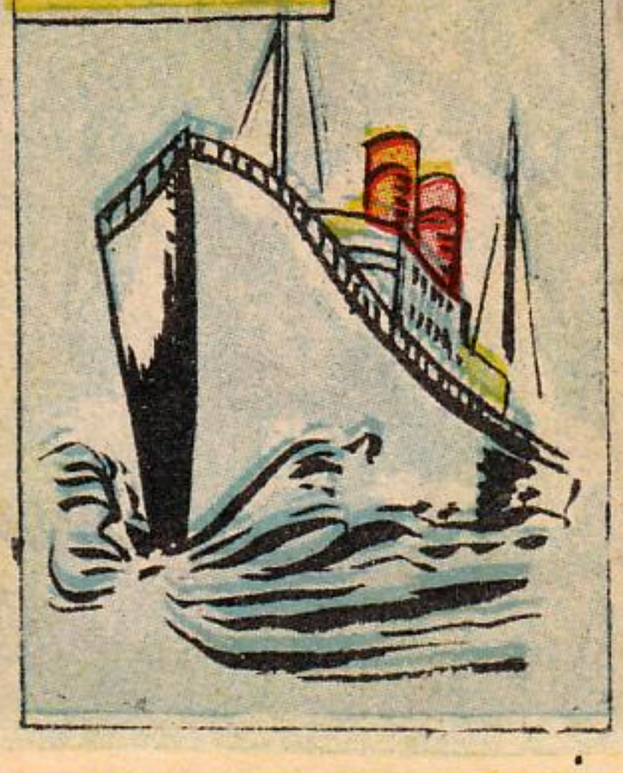

इसी बीच प्रथम महायुद्ध आरंभ हो गया।

गांधीजी ने घायलों की सेवा के लिए एक टुकड़ी तैयार की। प्राथमिक चिकित्सा की शिक्षा ली।

स्वदेश लौटने पर। जन-समूह स्वागतार्थ उमड़ पड़ा।

मई १९१५ में अहमदाबाद के कोचरब नाम के गांव में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की गई।

आश्रम के युवा-सदस्य कस्तूरबा को माता तुल्य और गृहदेवी के रूप में मानते थे।

एक दिन एक अछूत परिवार ने आश्रम में शरण मांगी।

इस बात से आश्रमवासियों में असंतोष फैल गया।

कस्तूरबा तथा दूसरी महिलाओं ने भी विरोध किया।

यह बेतुकी बात है। हमसे यह उम्मीद कि हम अछूतों के साथ घुलमिल जाय।

गांधीजी को इससे बहुत दुःख पहुंचा।

कस्तूरबा ने यह देखा और वह गांधीजी के पास गई।

बापू, मुझे अफसोस है।

इसके बाद अछूतों के प्रति कस्तूरबा की घृणा दूर हो गई और उन्होंने इस अछूतपन के कलंक को हिन्दू समाज से हटाने में अपना सबकुछ लगा दिया।

१९१७ में गांधीजी ने चम्पारन के किसानों को गोरे निलहों की गुलामी से मुक्त कराने का बीड़ा उठाया।

कस्तूरबा को ग्रामवासियों का सफाई व शिष्टाचार आदि सिखाने के लिए चुना गया।

स्वच्छता स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य है।

अपने कार्य के दौरान में।...

बहनो, तुम अपनी साड़ी रोज अपने आप क्यों नहीं साफ करती?

क्योंकि हमारे पास दूसरी साड़ी नहीं है।

इससे कस्तूरबा को बहुत सदमा पहुंचा।

अपने इसी कठिन अनुभव से उन्होंने देश के अशिक्षित और गरीब लोगों की सेवा करना सीखा।

१९१८ की गर्मियों में गांधीजी को बड़े जोर की पेचिश हो गई। डाक्टरों ने उन्हें दूध का सेवन करने को कहा।

आपने गाय का दूध न पीने का प्रण लिया है। आप बकरी का तो पी सकते हैं।.....

१९२१-२२ के असहयोग आंदोलन में गांधीजी गिरफ्तार हुए और जेल में बंद कर दिये गये।

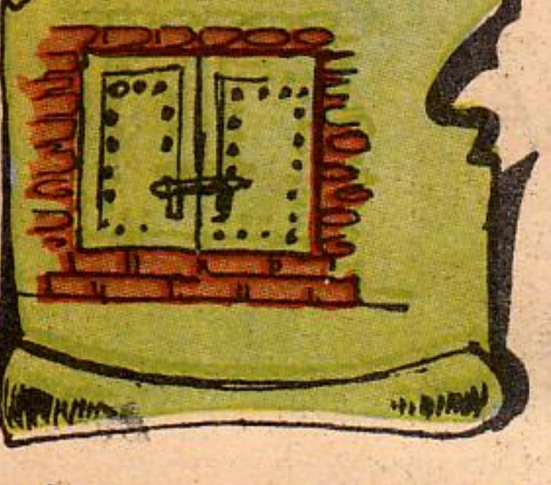

कस्तूरबाने निडरता के साथ आगे कदम बढाया और राष्ट्र के प्रति एक रोमांचकारी संदेश जारी किया।

१९३० के नमक-सत्याग्रह में गांधीजी के साथ हजारों ने भाग लिया और सविनय अवज्ञा के लिए जेल गये।

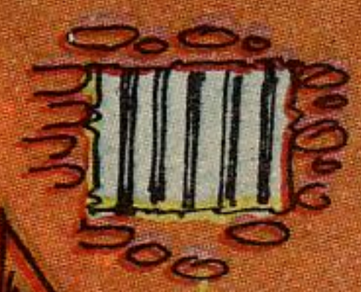

गांधीजी की अनुपस्थिति में कस्तूरबा ने ग्रामों का दौरा किया।

और पुलिस के अत्याचार से पीड़ित लोगों की सेवासुश्रूषा की।

कस्तूरबा अपने लड़कों से मिलने जेल में गई।

गोलमेज परिषद में भाग लेकर इंगलेण्ड से लौटने के बाद गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें बिना मुकदमा चलाये ४ जनवरी १९३२ को जेल में डाल दिया।

१५ जनवरी को कस्तुरबा ६ सप्ताह के लिए जेल भेज दी गई।

जेल से छूटने के बाद फिर उनको बारडोली में ६ महीने का कठोर दण्ड मिला।

लोगों को भड़काने के लिए छः महीने का कठोर कारावास।

अप्रैल १९३५ में गांधीजी ने साबरमती आश्रम भंग कर दिया और वर्धा के पास सेवाग्राम को अपना केन्द्र बनाया। कस्तूरबा ने गृहकार्य संभाला।

सेवाग्राम का जीवन उनकी देखरेख में चलता रहा। वह गांधीजी तथा मेहमानों की सेवा में लगी रहतीं, रसोई की देखभाल करतीं। शेष समय रामायण और गीता पढ़ने में बिताती।

मार्च १९३९ में राजकोट के शासक ने जनता को राजनैतिक सुधार देने से इंकार कर दिया।

मैं राजकोट की लड़की हूं। मैं इस आंदोलन का नेतृत्व करूंगी।

राजकोट के शासक के वचन भंग के विरुद्ध गांधीजी ने अनशन आरंभ कर दिया।

इस दरमियान सत्याग्रह करते हुए कस्तूरबा जेल चली गई।

बड़े से बड़ा त्याग भी कम है, जब हमारे सारे देश की स्वतंत्रता ख़तरे में हो।

गांधीजी के उपवास के कारण कस्तूरबा को उनसे मिलने की अनुमति मिल गई।

आपने मुझे अपने उपवास के बारे में बताया क्यों नहीं।

तुम आई कैसे?

सरकार ने मुझे अनुमति दे दी।

तुम्हे जेल में ही रहना चाहिए।

१९४० में गांधीजी और कस्तूरबा दोनों रवीन्द्रनाथ ठाकुर से शांतिनिकेतन में मिले।

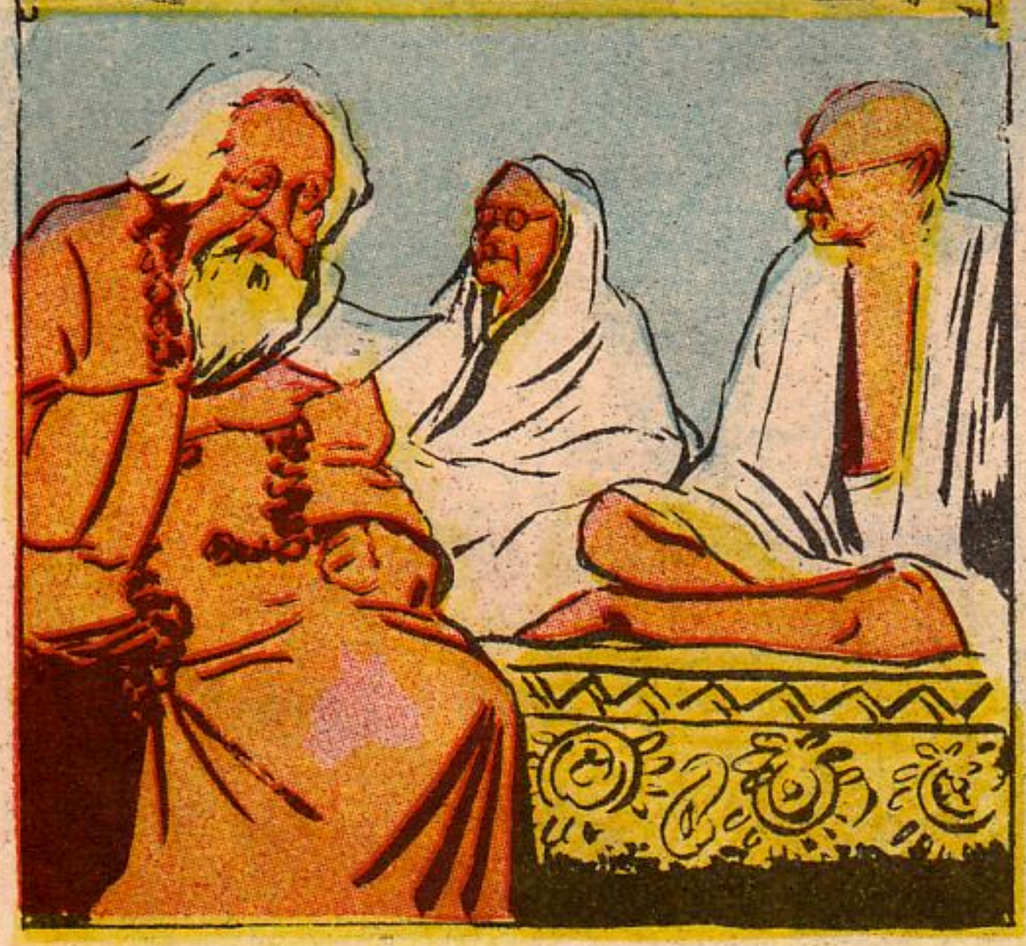

१९४२ में 'भारत छोड़ो' आंदोलन छिड़ते ही सारे देश ने गांधीजी के 'करो या मरो' आदेश का पालन करने के लिए कमर कस ली।.....

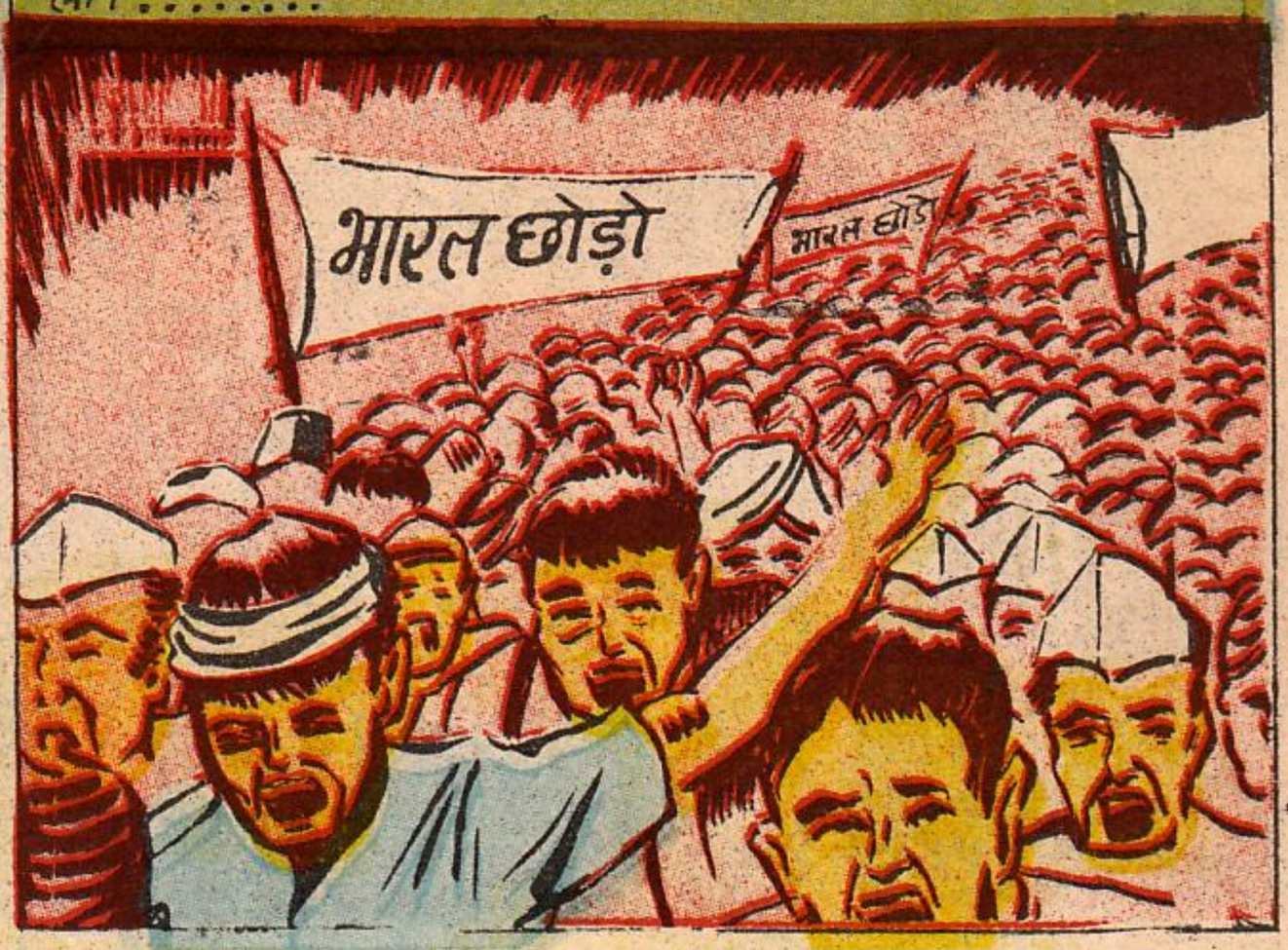

९ अगस्त १९४२ में गांधीजी और कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्य पकड़ लिये गए।

हिंसा फिर फैल गई।

शिवाजी पार्क, दादर में गांधीजी एक सार्वजनिक सभा में भाषण देने वाले थे, लेकिन....

तुरन्त वह, डाक्टर सुशीला नैयर और प्यारेलाल के साथ गिरफ्तार कर ली गई और आर्थर रोड जेल में वे ले जाये गये।

अपने पति के वियोग के धक्के का उनके स्वास्थ्य पर बड़ा असर पड़ा।

उन्हें आगा खां महल, पूना ले जाया गया, जहां गांधीजी नजरबंद थे।

एक और कठिन परीक्षा ने उनके स्वास्थ्य पर गहरा असर डाला। वह था गांधीजी का २१ दिन का उपवास जो उन्होंने फरवरी १९४३ में आरंभ किया था।

दो साल तक वह जेल में रहीं।

दिसम्बर १९४२ के आरंभ में उन्हें दो बार दिल के दौरे पड़े।

इनकी हालत चिंताजनक है, लेकिन उम्मीद है कि ठीक हो जायेंगी।

कस्तूरबा को जेल से रिहा करने का प्रश्न कामन्स सभा में उठाया गया।

क्या भारत सरकार श्रीमती गांधी को स्वास्थ्य के आधार पर रिहा करने को विचार कर रही है?

यह तो भारत सरकार ही तय करे तो अच्छा है।

१९४४ की जनवरी में उनकी हालत दिन-ब-दिन गिरती गई।

इनकी हालत सुधरने की कोई आशा नहीं।

२० फरवरी, १९४४ को बंबई सरकार ने एक विज्ञप्ति जारी की.

श्रीमती गांधी की हालत पिछले कुछ दिनों से बराबर बिगड़ रही है, और अब बड़ी चिंताजनक है।.....

दो दिन बाद उन्होंने अपने पुत्र देवदास को बुला भेजा।

मुझे एक दिन जाना है.... आज ही क्यों नहीं? ....

उसके बाद वह बिना किसी की मदद के उठ बैठीं।

हे भगवान, मुझे तेरी शरण चाहिए, दया चाहिए।

२२ फरवरी को शाम के साढ़े सात बजे उन्होंने गांधीजी को बुलाया और उनकी गोद में अपना सिर रख कर इस संसार से शांति-पूर्वक विदा हो गईं।

अंतिम संस्कार आगा खां महल में हुआ।

संसार के कोने-कोने में इस साधारण स्त्री को श्रध्दांजलियां अर्पित की गईं, जो सीता, सावित्री, दमयंती और अरुंधती जैसी दिव्य आत्माओं के गुण लेकर इस धरती पर जन्मी थी और जो भारतीय नारी का आदर्श थी।
उन जैसा कठिन और यंत्रणाओं एवं विपत्तियों से भरा जीवन अन्य किसी स्त्री के लिए संभव नहीं हो सकता था। इस बहादुर छोटी-सी महिला ने जो सहा, उसे कोई भी दूसरी स्त्री सहन नहीं कर सकती थी।..... यह तो कस्तूरबा जैसी स्त्री के लिए ही संभव था कि वे पूरी प्रसन्नता तथा प्रेरणादायक मर्म-स्पर्शी श्रध्दा के साथ इतनी बड़ी कठिनाइयां सहने में सफल हो सकीं। अपनी विनम्रता, कोमलता, प्रेमल स्वभाव, अतुलनीय सहनशीलता तथा अद्वितीय त्याग-भावना से वह भारतीय नारी की महान गरिमा का प्रतिनिधित्व करती थी।
- ब्लिट्स बंबई
कस्तूरबा की महानता उनके आत्मत्याग में थी। भारत की स्वाधीनता प्राप्त करना महात्मा गांधी का जीवन कार्य था। कस्तूरबा ने अपनी समस्त इच्छाएं एवं भावनाएं अलग रखकर अपने पति के इस महान कार्य को सफल बनाने में अपने अपने आपको खपा दिया। - एम.आर मसानी बंबई के मेयर
श्रीमती गांधी एवं उनके पति के महान कार्यों के प्रति हम वर्षों से सहानुभूति रखते रहे थे। कस्तूरबा की मृत्यु से न केवल भारत की, बल्कि सारी दुनिया की हानि हुई है।
- बिल राजर्स (जू) अमेरिकन कांग्रेस के सदस्य
उनका मूक समर्पित जीवन पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए पीढ़ियों तक प्रेरणादायक रहेगा।
- लंदन
कस्तूरबा की मृत्यु से भारतीय राष्ट्र एवं महिला-जगत की बड़ी हानि हुई है।
- जंजीबार
सन १९१३ के महान संघर्ष में उनका उत्पीड़न आज भी हमारे दिमाग में ताजा है।
- डरबन दक्षिण अफ्रीका.
आगाखां महल की चहारदीवारी में एक समाधि बनी, जिस पर गांधीजी फूल चढ़ाकर प्रार्थना किया करते थे।
साठ साल।.....साठ सालों से भी अधिक वह साथ रही।..... उसके बिना जीने की कल्पना करना भी मुश्किल है।.....
...और संकट के समय में दिखाया गया वह रोमांचकारी साहस, भव्यता में सादगी, दरिद्रता में सहानुभूति, उत्तेजन की घड़ी में आज्ञाकारिता, सबसे बड़ी बात यह कि कठिन परिस्थिति में अपने को अनुकूल बनाना। सरोजिनी नायडू की श्रध्दांजलि के अवतरण देना उपयुक्त होगा।...
उस दुबली-पतली किन्तु बहादुर स्त्री की आत्मा को शांति प्राप्त हो, जो भारतीय नारी की सजीव प्रतीक थी।
जिस महापुरुष को वह प्रेम करती थी, उनकी सेवा करती थीं, और जिनके पीछे अद्वितीय साहस, विश्वास तथा निष्ठा से चलती थीं, उनके चरण चिन्हों पर सतत त्याग के कठोर रास्ते पर जिनके पैर कभी नहीं डगमगा न दिल घबराया।
आईये, हम खुशी मनायें कि वह मृत्यु से अमरता की ओर चली गई और भारत के आख्यान इतिहास और गीतों की प्यारी वीरांगनाओं के साहस-भरे समुदाय में उन्होंने अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त कर लिया।

वे आगे आनेवाली पीढ़ियों के लिये इस बात की शानदार याद रहेंगी कि सफलता त्याग द्वारा ही मिलती है।

प्रकाशक
पुरोहित एण्ड सन्स्
नीलम मेंशन
लेमिंगटन रोड,
बम्बई–४